पंच तत्त्व की पीर

(पर्यावरणीय बाल दोहावली)

● सत्यवीर नाहड़िया

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335 देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250001

इस पुस्तक का कोई भी अंश, लेखक की पूर्वानुमति
के बिना प्रयोग निषेध है।

ISBN	:	"978-81-946288-8-0"
सर्वाधिकार ©	:	सत्यवीर नाहड़िया
मूल्य	:	₹85/-
प्रथम संस्करण	:	जुलाई, 2020
प्रकाशक	:	समदर्शी प्रकाशन, 335, देवनगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-25001 मोबाइल नंः 9599323508 Website: www.samdarshiprakashan.com Email: samdarshi.prakashan@gmail.com
आवरण	:	अमित 'मनोज'
मुद्रक	:	थॉमसन प्रेस

'Panchtattv Kee Peer' Poems By- Satyavir Naharia ₹85/-

अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त
पर्यावरणविद् डॉ. जे.एस. यादव
नीरपुर, नारनौल (जयहिंद अंकल!)
के उच्च आदर्शों एवं पावन
स्मृति को साद ...

भूमिका

पर्यावरण जागरूकता का संदेश देती कृति 'पंच तत्त्व की पीर'

'पर्यावरण' दो शब्दों से मिलकर बना- परि+आवरण, अर्थात् हमारे चारों ओर का घेरा। इस पर्यावरण में ही पंच तत्त्व भी मौजूद हैं, जिनसे मानव शरीर का निर्माण होता है। वे तत्त्व हैं- आग, पानी, धरती, हवा और आकाश। गोस्वामी तुलसीदास ने भी लिखा है-

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंच तत्त्व यह, अधम शरीरा।।

कवि सत्यवीर नाहड़िया ने इन पंच तत्त्वों के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण जागरूकता देने का प्रयास किया है, जो क़ाबिले तारीफ़ है।

कवि सत्यवीर नाहड़िया हिंदी एवं हरियाणवी भाषा के एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनकी रागनी, दोहा, कुंडलिया, आल्हा एवं अन्य विधाओं में नौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'पंच तत्त्व की पीर' सत्यवीर नाहड़िया की नवीनत्तम कृति है, जिसमें पर्यावरण जागरूकता संबंधी 250 दोहों का समावेश है।

पंच तत्त्व के स्वरूप एवं महत्त्व पर बल देते हुए कवि लिखता है-

पंच तत्त्व से ही बना, मानव खास शरीर।
पाँच तत्त्व का 'पूतला', गाता फिरे फकीर।।
पाँच तत्त्व धारें सदा, न्यारे-न्यारे नेग।
धरती धीरज धारती, वायु धारती वेग।।
पाँच तत्त्व यदि स्वस्थ हैं, होते सभी निहाल।
पाँच सधे तो सब सधे, क़ुदरत करे कमाल।।

कवि की चिंता है कि आज हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होता जा रहा है। वह लिखता है-

दूषित है पर्यावरण, दूषित है हर श्वास।
कलुषित मानवता हुई, मूल्यों का उपहास।।
चहके यदि पर्यावरण, महके क़ुदरत मात।
चलो सुधारें रोज ही, मिल इसके हालात।।

कवि का मानना है कि पंच तत्त्वों में एक 'धरती' भी आज प्रदूषण की मार से ग्रस्त है। देखिए-

धरा-भूमि धरती कहो, और कई हैं नाम।
जो सबको है धारती, कई परत आयाम।।
कभी धरा थी झूमती, हरियाली को नाप।
तपती आज बुखार में, चढ़ा मात को ताप।।

'पानी' को लेकर कवि की चिंता देखिए-

छोटे-छोटे ही कदम, बन जाते हैं लार्ज।
चलो कुएँ अरु बावड़ी, करें आज रीचार्ज।।
जल-संरक्षण से बचे, जीव-जगत संसार।
जल-संकट है सामने, माचे हाहाकार।।

'हवा' के विषय में कवि के विचार हैं-

पाँच भूत में एक है, हवा-वायु है नाम।
मिश्रण गैसों से बना, नाम पवन भी आम।।

जीवनदायी दें हवा, पेड़ रचे आयाम।
खुद पीते जहरी सदा, गैस एक बदनाम।।

पंच तत्त्वों में प्रमुख 'आग' को लेकर कवि पुकार उठता है-

आग एक है ऊर्जा, अग्नि नया है नाम।
ईंधन जलने से मिले, करे ऊर्जा काम।।
बिजली-बादल से कहीं, कहीं उदर का राग।
कई तरह की ऊर्जा, नाम सभी का आग।।

'आकाश' नामक पंच तत्त्व को लेकर भी कवि संवेदनशील है-

आसमान, आकाश या नील नया आयाम।
गगन, व्योम, अंबर सभी, हैं इसके ही नाम।।
अंबर है ऊँचा बहुत, फैला खूब विशाल।
धरती के ऊपर बिछा, एक अनूठा जाल।।

लेकिन आज हमारे पर्यावरण यानी पंच तत्त्वों पर प्रदूषण हावी हो रहा है। तभी तो कवि लिखता है-

अगर प्रदूषण ना रुका, बिगड़ेंगे हालात।
पंच-तत्त्व बदरूप हो, कलुषित क़ुदरत गात।।

इसी प्रदूषण का शिकार है हमारी धरती, हवा, पानी सभी। देखिए-

बढ़े कारखाने बहुत, बढ़ा प्रदूषण आज।
कैसा हुआ विकास रे, पड़ी हवा पर गाज।।
सड़कों पर नित बढ़ रहा, भारी यातायात।
बढ़ा प्रदूषण है बहुत, बदतर हैं हालात।।

पॉलीथीन को लेकर भी कवि कराह उठता है-

पॉलीथीनी बैग अब, करें प्रदूषण मार।
गलता, मिटता ये नहीं, है धरती पर भार।।

कवि चाहता है कि पौधारोपण के साथ-साथ पेपरलैस काम किए जाएँ ताकि पर्यावरण में सुधार हो। देखिए-

करिए पेपरलैस अब, संभव जितना काम।
पेड़ बचेंगे खूब रे, रचें नये आयाम।।
वर्षगाँठ या जन्म-दिन, या दिन कोई खास।
पौधे सदा लगाइए, आए क़ुदरत रास।।

कवि ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भी सजग है। वह कहता है-

ग्लोबल वार्मिंग आज की, बड़ी समस्या खास।
असर दिखाने यह लगी, दुनिया को अहसास।।

कवि खानपान को लेकर भी सुझाव देता है-

भाँग-तंबाकू घोलते, जीवन में विष खास।
बुरे-कर्म के सारथी, कभी न जाना पास।।
माँसाहारी लोग ही, बने रोग की चेन।
कोरोना-सा वायरस, माँसाहारी देन।।

कवि अपनी प्राचीन संस्कृति के मूल बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देता है। देखिए-

मटका देशी फ्रीज है, करें इसे उपयोग।
ज्यादा ठंडा नीर तो, करें अनेकों रोग।।
मुट्ठी दाना डालिए, पानी रखें जरूर।
पछी आएँ रोज फिर, हटे निराशा दूर।।

अंततः कवि कुछ सुझाव देना भी नहीं भूलता है। देखिए-

अब वैज्ञानिक सोच से, करना बस हर काम।
कुदरत की रक्षा करें, कुदरत पावन धाम।।
पंच-तत्त्व खुद देव हैं, पूजो इनको रोज।
घटे न इनका मान रे, मिटे न इनका ओज।।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कृति में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों व मुहावरों ने दोहों की सार्थकता दूनी कर दी है। बाल मनोविज्ञान के अनुरूप कृति की रचना की गयी है, जिसकी भाषाशैली सरल, सरस एवं बोधगम्य है।

बच्चे इस पर्यावरणीय दोहावली से अवश्य ही अपने जीवन में जागरूकता का रंग बिखेरेंगे, ऐसी उम्मीद है। कवि बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

-डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
(हिंदी अकादमी दिल्ली से सम्मानित)
785/8, अशोक विहार,
गुरुग्राम-122006 (हरियाणा)
संपर्क सूत्रः 9210456666

8 मई, 2020

भूमिका

लीक से हटकर है यह प्रयास

दोहा ऐसा छंद है कि लोगों की जुबान पर चढ़ जाए तो लोकोक्ति बन जाता है। आज भी लोक में ऐसे बहुत से दोहे हैं, जिनके मूल रचनाकार का नाम तक ज्ञात नहीं है, लेकिन पहेलियों और लोकोक्तियों के रूप में समाज में बेहद प्रचलित हैं। दोहा दिखने में जितना छोटा छन्द है, उसकी संरचना उतनी ही जटिल है। फिर भी समकालीन साहित्यकारों का यह पसंदीदा छंद बन चुका है। बड़ी तादाद में लोग दोहा लिख रहे हैं, जो रीतिकाल और भक्ति काल से बिल्कुल भिन्न है।

हरियाणवी संस्कृति-लेखक, समीक्षक और विज्ञान के प्राध्यापक श्री सत्यवीर नाहड़िया ने दोहा विधा में प्रकृति के पाँच प्रमुख घटकों, जिन्हें शास्त्रों में पंचमहाभूत कहा गया है, को अपना कथ्य बनाते हुए पर्यावरण बाल दोहावली 'पंचतत्व की पीर' की रचना की है। कवि ने बिगड़ते पर्यावरण के प्रति लोगों में चेतना पैदा करने और यह समझाने के लिए कि जीवित रहने के लिए इन पंचमहाभूतों का स्वच्छ होना आवश्यक है, दोहा छंद को चुना है। अभी तक लोगों ने दोहों में शृंगार और भक्ति रस का आनंद लिया है, किंतु अब विज्ञान और पर्यावरण की बातें भी दोहों के

माध्यम से कहकर कवि ने दोहे को नए आयाम दिए हैं।

कवि ने यह समझाने का प्रयास किया है कि भगवान का वास्तविक अर्थ यही पंचमहाभूत हैं- '**भ**-भूमि, **ग**- गगन, **व**-वायु, **आ**- आग, **न**- नीर।' इनकी सुरक्षा और सम्मान ही ईश्वर की सच्ची भक्ति है। आज पर्यावरण पर गंभीर संकट है, हवा ज़हरीली हो चुकी है, भूजल पाताल में पहुँच चुका है, नदियाँ गंदे नालों का रूप ले चुकी हैं, शोर प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है, भूमि बंजर हो रही है, पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, ओजोन लेयर क्षतिग्रस्त हो चुकी है, जंगल तेजी से सिकुड़ रहे हैं और बरसात के साथ तेजाब बरस रहा है। कवि सवाल करता है-

कोई क्यों सुनता नहीं, पंच तत्त्व की पीर।
बद से बदतर हो रही, नित इनकी तस्वीर।।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है, जिससे ग्लेशियरों की बर्फ़ तेजी से पिघल रही है और महासागरों का जलस्तर बढ़ रहा है, जिसके कारण द्वीप डूब रहे हैं और तटवर्ती नगरों को खतरा उत्पन्न हो गया है। कवि ने इस भयावह स्थिति के प्रति हमें चेताया है।

उथल-पुथल इतनी मचे, नहीं सकेंगे नाप।
यदि यूं ही बढ़ता रहा, धरती का यह ताप।।

दुनिया में आज भी डेढ़ अरब से अधिक लोग ऐसे हैं, जिन्हें स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है। भारत में भी स्थिति बहुत गंभीर है। पूंजीपतियों ने प्राकृतिक संसाधन जल को भी व्यापार की वस्तु बनाकर मुनाफा कमाना शुरू कर दिया है। कवि ने इस अनैतिक व्यापार को बेनकाब करते हुए लिखा है-

जब से बोतलबंद का, रूप लिया है धार।
गया फैलता विश्व में, पानी का व्यापार।।

हमारे देश में एक मुहावरा है 'जंगल में मंगल', किंतु अब जंगल में मंगल नहीं दिख रहा। जिस तेजी से जंगल काटे जा रहे हैं, वह कवि को

विचलित करता है। कवि इस बदलती स्थिति का वर्णन कुछ यूँ करता है-

जंगल में मंगल कहाँ, चली गई वह बात।
जंगल अब दंगल हुआ, बदल गए हालात।।

बढ़ते प्रदूषण और रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से हमारी कृषि भूमि की सेहत भी खराब हो रही है। कवि सुझाव देता है कि जैसे हम अपनी सेहत का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार सही उपज लेने के लिए अपने खेतों का भी ध्यान रखें-

जैसे अपनी देह का, सदा रखें सब ख्याल।
जांच कराओ खेत की, मिट्टी की हर साल।।

विज्ञान और पर्यावरण जैसे विषयों पर दोहे रचते समय बहुत अलंकारिक भाषा की अपेक्षा नहीं की जा सकती। फिर भी कवि ने सहज सरल भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का उपयोग करते हुए सार्थक सृजन किया है। कुछ स्थानों पर मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है। कवि का लक्ष्य यहाँ पंच तत्त्व की पीड़ा को भावी पीढ़ी तक छंदों में पहुँचाना था, जिसमें वह पूरी तरह सफल रहा है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, इस संग्रह से बच्चे बेहद लाभान्वित होंगे और पंच महाभूतों के प्रति उनमें जागरूकता पैदा होगी, क्योंकि दोहावली में वैज्ञानिक तथ्यों को बेहद सरल व सहज भाषा में रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। लीक से हटकर किए गए इस कार्य के लिए कवि बधाई का पात्र है। संग्रह की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

15 मई, 2020

-रघुविन्द्र यादव,
संपादक, बाबूजी का भारतमित्र
प्रकृति-भवन नीरपुर, नारनौल
(हरियाणा)- 123001
संपर्क सूत्रः 9416320999

आइए, पर्यावरण के प्रहरी बनें

विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण पर्यावरण में दिनों-दिन बढ़ रहे असंतुलन को रोकने के लिए विभिन्न मंचों से इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन की चर्चाओ में शामिल रहा हूँ। करीब दो दशकों से पर्यावरण चेतना से जुड़े विभिन्न प्रकल्पों में कार्य करने का सौभाग्य मिला। इस दौरान मैंने महसूस किया कि नयी पीढ़ी के लिए पर्यावरण को लेकर सरल शब्दों में सामग्री का कुछ अभाव-सा है, वस्तुतः दोहों के माध्यम से पंच-तत्त्व की पीर कहने का प्रयास किया, ताकि पर्यावरण चेतना की मुहिम में छात्र-छात्राएँ सच्चे संवाहक बनकर प्रेरक योगदान दे सकें।

इस पुस्तक की भूमिका लिखकर वरिष्ठ बालसाहित्यकार डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल तथा पर्यावरणविद-दोहाकार श्री रघुविंद्र यादव ने मुझ पर जो उपकार किया है- उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। इस कृति को कलात्मक स्वरूप प्रदान करवाने वाले मेरे प्रकाशक एवं साहित्य मर्मज्ञ योगेश समदर्शी जी का हृदय से आभारी हूँ।

माता-पिता का आशीष, परिजनों व शुभचिंतको की शुभकामनाएँ, अर्द्धांगिनी श्रीमती गीता, बेटे सत्यगीत तथा बिटिया आस्था द्वारा इस कृति के विषय सुझाने तथा बहुमुखी सहयोग के लिए मैं अभिभूत हूँ। यह कृति इस आशा एवं विश्वास के साथ आपको सौंप रहा हूँ कि हम पर्यावरण के पक्षधर एवं पोषक बनेंगे। आइए, पर्यावरण के प्रहरी बनें।

26 अप्रैल, 2020

-सत्यवीर नाहड़िया

1.

शब्द साधना दीजिए, हे मेरे भगवान।
लिख पाऊँ मैं ज्ञान से, दोहों में विज्ञान।।

2.

मैं थोड़ा ही जानता, बस इतना है ज्ञान।
घट-घट में भगवान है, कण-कण में विज्ञान।।

3.

मैं मूरख नादान हूँ, ना कविता का ज्ञान।
अर्ज़ करूँ माँ शारदे, रहे कलम का मान।।

4.

दोहों की धुन है रमी, तन-मन गूँजे रोज।
दोहे ये विज्ञान के, शब्द रहे हैं खोज।।

5.

शब्द-शब्द हो साधना, कुदरत का हो मान।
अक्षर-अक्षर ज्ञान का, छंदों में विज्ञान।।

6

गुनूँ ज्ञान-संवेदना, कहूँ ज्ञान-पहचान।
सुनूँ ज्ञान-संभावना, लिखूँ ज्ञान-विज्ञान।।

7

सदा बड़े ही ध्यान से, मिले ज्ञान को मान।
खास ज्ञान का नाम ही, हुआ आज विज्ञान।।

8

किसकी हम पूजा करें, बतलाता विज्ञान।
पाँच तत्त्व को पूजिए, वे असली भगवान।।

9

पंच तत्त्व से ही बना, मानव खास शरीर।
'पाँच तत्त्व का पूतला', गाता फिरे फकीर।।

10

कुदरत में मिलते सभी, जब हो तन का नाश।
आग, हवा, जल साथ में, धरा और आकाश।।

11

आग एक है ऊर्जा, अग्नि नया है नाम।
ईंधन जलने से मिले, करे ऊर्जा काम।।

12

बिजली-बादल से कहीं, कहीं उदर का राग।
कई तरह की ऊर्जा, नाम सभी का आग।।

13

जल की माया है अलग, यह इक यौगिक रूप।
ठोस-द्रव या गैस के, तीनों रूप अनूप।।

14

बिन पानी सब सून है, कवि रहिमन की बात।
बिन जल ना हों जीव के, जीने के हालात।।

15

पाँच भूत में एक है, हवा-वायु है नाम।
मिश्रण गैसों से बना, नाम पवन भी आम।।

16

सबसे ज्यादा है बसी, 'नाईट्रोजन' सार।
ऑक्सीजन वह गैस है, जो जीवन आधार।।

17

धरा-भूमि धरती कहो, और कई हैं नाम।
जो सबको है धारती, कई परत आयाम।।

18

बहुत खजाने हैं भरे, खनिजों का भंडार।
केवल धरती पर मिले, जीवन का आधार।।

19

आसमान आकाश या, नील नया आयाम।
गगन-व्योम अंबर सभी, हैं इसके ही नाम।।

20

अंबर है ऊँचा बहुत, फैला खूब विशाल।
धरती के ऊपर बिछा, एक अनूठा जाल।।

21

पंच-तत्त्व से है बनी, जीव-जगत पहचान।
ये सारे अनमोल हैं, रक्खें इनका मान।।

22

पंच-तत्त्व से है बना, कुदरत का हर रूप।
रखना इनका मान है, कुदरत रूप अनूप।।

23

पंच तत्त्व ही सार है, पंच तत्त्व आधार।
इससे हर जीवन बना, जिससे फिर संसार।।

24

पंच तत्त्व को पूजना, कुदरत पूजा खास।
सबका ही कल्याण है, सबको आए रास।।

25

कुदरत का विस्तार से, पाना है यदि ज्ञान।
आओ सब मिलकर पढ़ें, खास ज्ञान विज्ञान।।

26

पाँच तत्त्व धारें सदा, न्यारे-न्यारे नेग।
धरती धीरज धारती, वायु धारती वेग।।

27

शीतलता हो नीर में, रखे ऊर्जा आग।
विशालता आकाश में, पंच तत्त्व का त्याग।।

28

कोई क्यों सुनता नहीं, पंच तत्त्व की पीर।
बद से बदतर हो रही, नित इनकी तस्वीर।।

29

धरती को थे मानते, कभी सभी जन मात।
आज हाल बदहाल हैं, मत पूछो हालात।।

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति आज ही खरीदें।